IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन:
(बागेश्वर जनपद में स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ० सरिता
असिस्टेंट प्रोफेसर
आईएफटीएम यूनिवर्सिटी
मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

शोध सारांश

प्राचीन काल से ही महिला एक अच्छे प्रबंधक के रूप में कार्य करती आयी है। क्योंकि घर रूपी इकाई या संस्था का प्रबंधन न केवल व अपनी आर्थिक स्थितिए सामाजिक व परिवारिक स्थित आदि के आधार पर करती है, बल्कि आपसी सामन्जस्य और तनावपूर्ण शक्ति को ध्यान में रखकर प्रबंधन के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिला Iशक्तिकरण में स्वयं सहायक समूहों की भूमिका का अध्ययन करना है।

Kyeworld: स्वरोजगार, ग्रामिण महिलाएं, आर्थिक स्थिति, स्वयं सहायक समूहों, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना–

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है किसी भी समाज के समग्र एवं सन्तुलित विकास के लिए महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक होता है। महिलाएं एक तरह से सामाजिक संरचना की रीढ़ होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि महिलाए समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होती है, और इनके अस्तित्व के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वर्तमान बदलती हुई परिस्थितियों में महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर एक अलग पहचान तो दिलाई हैं, साथ ही उन्हें आर्थिक रूप से निर्भर तथा सशक्त भी बनाया हैं, ग्रामीण समाज भी इससे अछूता नही है। वर्तमान समय में ग्रामीण समाज की महिलाएँ भी अपने परिवार की आर्थिक आय को बढ़ाने एवं एक अच्छा जीवन स्तर प्राप्त करने के उद्वेश्य से विविध क्षेत्रों में स्वरोजगार करके अपने पारिवारिक दायित्व के निर्वहन के साथ साथ परिवार के आर्थिक स्थिति को सुद्रढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी कर रहीं हैं। स्वरोजगार एवं स्वयं सहायता समूह का गठन महिलाओं को इसी परिपेक्ष्य में आर्थिक रूप से सशक्त एवं सबल बनाने का एक नवीन प्रयास हैं। स्वयं सहायता समूह सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के लोंगों का एक स्वैच्छिक संगठन हैं। स्वंय सहायता समूह लेन देन के माध्यम से आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए एक साथ तत्पर रहते हैं। तीन दशक पहले बंगलादेश **में माइको फाइनेंस (सूक्ष्म वित्त)** के द्वारा शुरू किया गया था, इसे एक हथियार के रूप में गरीबी और भूख के खिलाफ प्रयोग किया गया[1] ।महिलाओं की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन उनमें व्याप्त आर्थिक स्वतंत्रता के आधार पर किया जा सकता है। इसके लिए स्वयं सहायता समूह एक कारगार कदम है महिलाएँ निरन्तर इससे जुडकर स्वरोजगार की प्रकिया को अपनाते हुए आर्थिक स्वतंत्रता को प्रमाणित करने का प्रयास कर रही हैं। ”महिला आर्थिक सशक्तिकरण से आशय महिलाओं की वैयक्तिक आर्थिक

स्थिति का उन्नयन करने, उन्हें धनोपार्जन, पर्याप्त अवसर, आर्थिक स्वतंत्रता, आर्थिक मुद्दो पर अपनी राय ररखने व निर्णय लेने वाले के अधिकार प्रदान किया जाने से है।" [2]
स्वंय सहायता समूह का गठन महिलाओ की आर्थिक निर्भरता को समाप्त कर उन्हें आर्थिक रूप से सबल करने का एक नया प्रारूप हैं। इस सामाजिक नीति के अन्तर्गत भारत के पंचवर्षीय योजना में बजट का प्रावधान किया गया था, जिसके द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह को संगठित कर उन्हें आर्थिक रूप से मद्द पहुँचाने की मंशा थी।[3] भारत में कुल जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत आज भी ग्रामीण भारत में निवास करता है, जिसमें कृषि तथा कृषि से जुड़े हुए अनेक ऐसे व्यवसाय है, जो ग्रामीण समाज की आजीविका का प्रमुख साधन माना जाता है। इस दिशा में अनेक ऐसी बहुआयामी विकास योजनाएँ है, जो ग्रामीण विकास में अपना प्रमुख योगदान देती है। बढ़ती हुई आवश्यकता तथा उच्चतर रहन–सहन ने आधुनिक समाजिक व्यवस्था को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण एवं भौतिकवादी बना दिया है। ऐसी स्थिति में महिलाओं का धनोपार्जन हेतु या आर्थिक रूप से सशक्त होने के लिए घर से बाहर निकलकर अन्य व्यवसाय में जाना आवश्यक माना जाने लगा है। इस दिशा में अनेक ऐसे संवैधानिक विकास कार्यक्रम है, जो ग्रामीण विकास, कमजोर वर्ग विशेषकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में विशेष जोर देते है। ग्रामीण विकास एक व्यापक कार्यक्रम है, जिसमें कमजोर वर्गों पर विशेष जोर दिया गया है। जिसका उद्‌देश्य केवल आर्थिक विकास को ही प्रोत्साहित करना नहीं बल्कि आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था में सुनियोजित रूप से जोड़ना एवं सक्रिय बनाना भी है।[4]
कार, चेन एवं झाबवाला के अनुसार "घर की चार दीवारी के भीतर महिलाएँ अपने आपको कमजोर अनुभव करती है, लेकिन समूह में भागीदारी एवं अन्य सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाओं से अन्तःक्रिया के माध्यम से आत्मनिर्भरता का स्वयं सहायता समूह प्रारूप महिलाओं के व्यापक विकास एवं सशक्तिकरण पर जोर देता है।"[5]
माइराडा [6] ने दक्षिण भारतीय प्रान्तों में अपने अध्ययन में पाया कि स्वयं सहायता समूहों ने स्वरोजगारियों की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने के अलावा परिवार में उनकी भूमिका का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त लोगों एवं संस्थाओं से संवाद करते समय उनके आत्मविश्वास में वृद्धि तथा सामाजिक राजनीतिक भागीदारी में विस्तार किया है। हालांकि अशिक्षा के कारण जनसंचार एवं अन्य साधनों तक पहुँच कम है। **यूनिसेफ** [7] के अनुसार 'स्वयं सहायता समूह अपनी आवश्यकता पूर्ति तथा समस्या समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करने का एक साधन है। चूँकि प्रस्तुत अध्याय का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना है तथा निजी व्यवसाय या स्वरोजगार के माध्यम से उनके आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को भी जानना है। जैसा कि यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, कि हमारे उत्तरदाता स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से
धनोपर्जन हेतु अलग–अलग क्षेत्रों में स्वयं के रोजगार से जुड़ी हुई है। अतः यह जानना आवश्यक है कि उनके जीवन तथा आर्थिक जीवन से जुड़े हुए निर्णय लेने की क्षमता कितनी प्रभावित हुई है। ग्रामीण समाज में स्वयं सहायता समूह महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण का बहुत

बड़ा साधन है। अतः प्रस्तुत सारणी में उत्तरदाताओं द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है, कि क्या वह स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त हो पाई है या नहीं? आर्थिक जीवन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय संरचना की रीढ के रूप में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐतिहासिक अनुकूलन से प्रतीक होता है, कि महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक प्रत्येक व्यवस्था में प्रत्यक्ष संबंध रहा है। प्राचीन काल में जहाँ घर से बाहर निकलकर महिलाओं का कार्य करना अनुचित समझा जाता था। वहीं महिलाओं ने विभिन्न व्यवसायों को अपनाकर न स्वयं को सशक्त किया है, बल्कि एक नये वर्ग को जन्म भी दिया है।

घर की चार दीवारी से निकलकर उन्होंने अपनी नई पहचान बनाई है, आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है और एक सम्मान व प्रतिष्ठापूर्ण जीवन जीने का प्रयास भी उनके द्वारा किया गया है। इसमें स्वयं सहायता समूहों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है।

महिलाएँ आर्थिक जीवन में जिस सक्रिय भूमिका निर्वाह कर रही है वह अत्यधिक उपयोगी व महत्वपूर्ण है और इसकी उल्लेख समाजशास्त्री अध्ययनों में भी मिलता है। ''सम्भवतयाः इस शताब्दी के मोड़ पर गरीबी से विवश हो नौकरी करने वाली महिलाओं के शिवा अन्य ऐसी महिलाऐं थी जो कार्य करती थी मगर अब पहले से कहीं अधिक महिलायें काम करने लगी है। जिससे कि वे परिवार के रहन सहन का स्तर पर्याप्त ऊँचा कर सके अथवा इसलिए भी कि वे काम करने की इच्छा रखती है [8]।

अध्ययन के उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना है ।

शोध अभिकल्प–

शोध अभिकल्प प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेषणात्मक है। अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अन्वेषणात्मक विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गाया है। जैसे कि हम जानते है कि महिलाऐं समाज का अभिन्न अंग होती है तथा किसी भी समाज का सामाजिक एवं आर्थिक विकास महिला सशक्तिकरण के बिना अधूरा है। वर्तमान समय में कई सरकारी तथा गैरसरकारी महिलाएं स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार से योजना के अन्तर्गत स्वरोजगार एवं स्वयं सहायता समूहों द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अनेको प्रयास किये जा रहे है अतः प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प ही उपयुक्त समझा गया । अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से भिन्न परिप्रेक्ष्यों जैसे सामाजिक आर्थिक धार्मिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से महिलाओं का अध्ययन कर उनकी एक समाजशास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत अध्ययन को निदर्श पर आधारित किया है, प्रस्तुत अध्ययन बागेश्वर जनपद के तीन ब्लॉक बागेश्वर कपकोट तथा गरूड ब्लॉक पर आधारित है। ब्लॉक से लिए गये आँकड़ों के अनुसार बागेश्वर ब्लॉक से लिए गये 208. कपकोट ब्लॉक में 228 तथा गरूड़ ब्लॉक में 274 (710) महिलाऐं स्वर्ण जयन्ती ग्रामस्वरोजगार योजना 1999 के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहा जुडकर स्वयं के स्वरोजगार में कार्यरत है। संख्या अधिक होने से कारण समग्र रूप से इन्हें अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। अतः अध्ययन हेतु दैव निदर्शन पद्धति का उपयोग कर निदेर्श चयन का निर्णय लिए गया।

अतः निदर्श के रूप में 710 का 50 प्रतिशत महिलाओं का चयन किया जायेगा यह चयन लॉटरी पद्धति द्वारा होगा अत प्रस्तुत अध्ययन कुल 355 अध्ययन इकाईयों पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आँकड़ो पर आधारित होगा तथा आँकड़े एकत्र करने के लिए मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची तथा आवश्यकतानुसार असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

उपलब्धिया–

चयनित उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन व उसके आधार पर सशक्तिकरण की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता, उनकी समाज में स्थिति, प्रतिष्ठा बैक संबंधी जानकारी, आर्थिक मुद्दों पर निर्णय लेने की वास्तविकता आदि के द्वारा तथ्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।
यह सर्वविदित है कि, सारे संसार में महिलाओं की स्थिति पुरूषों के पश्चात् की ही मानी जाती है और भारतीय समाज में यह असमानता और भी अधिक जटिल है। वर्तमान समाज में महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए संवैधानिक प्रावधानों की व्यवस्था लागू की गयी है। साथ ही कई क्षेत्रों में स्वंय सहायता समूह का गठन कर उनकी आर्थिक निर्भरता को समाप्त कर सबल बनाने का नया प्रयास भी एक सफल प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। जनपद बागेश्वर में चयनित महिलाएँ आज स्वंय सहायता समूह से जुड़कर स्वरोजगार को अपना रही है। ये सम्पूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों की महिलाओं के लिए एक नयी उपलब्धि है। क्योंकि सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों में आर्थिक स्थिति प्रमुख है। अतः जानने का प्रयास किया गया है कि स्वरोजगार संचालित करने वाली महिलाएँ अनुभव करती हैं कि स्वंय सहायता समूहों से जुड़कर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। प्राप्त तथ्य निम्नवत् है :–

स्वंय सहायता समूहों से जुड़कर आर्थिक रूप से सषक्त होने के सन्दर्भ में

उत्तरदाताओं के मत सारणी संख्या –01

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतित
1.	हाँ	355	100.00
2.	नहीं	–	–
3.	पता नहीं	–	–
4.	योग	355	100.00

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

उपरोक्त सारणी द्वारा प्राप्त प्रत्युत्तर अत्यधिक सकारात्मक परिणामों को प्रस्तुत करते है। क्योंकि 'स्वंय सहायता समूह' से जुड़कर स्वरोजगार अपनाने वाली महिलाओं को सम्पूर्ण (100:) ने स्वंय को आर्थिक रूप से सशक्त होने की बात को स्वीकार किया है।

एक पिछड़े क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन के साधन के रूप 'स्वंय सहायता समूह' एक नयी ताकत व महिलाओं के लिए एक नयी दिशा व नया संदेश लेकर आया है। जिससे महिलाओं में आत्मसन्तुष्टि का स्तर बढ़ा है। जैसा कि चयनित उत्तरदाताओं में 89.02 प्रतिशत उस वर्ग का है जो आज इस बात को स्वीकार करती हैं कि 'स्वंय सहायता समूह' के कारण महिलाएँ आज स्वंय की आर्थिक स्थिति से संन्तुष्ट हैं। 9.57 प्रतिशत ने नही व 1.41 प्रतिशत ने अनिश्चितता की स्थिति को स्पष्ट किया है। निम्न सारणी द्वारा तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है:–

स्वंय की आर्थिक स्थिति से सन्तुष्ट होने के सन्दर्भ में, उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 02

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रति[illegible]त
1.	हाँ	316	89.02
2.	नहीं	34	9.57
3.	अनिश्चित	05	1.41
4.	योग	355	100

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

जो महिलाएँ स्वंय रोजगार अपनाने के पश्चात् भी अपनी आर्थिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थीं, उनसे जानने के प्रयास पर परिणामों की अभिव्यक्ति निम्नवत् है:–

❖ महिलाओं ने स्वीकर किया है कि परिवारिक सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण आर्थिक आय अपर्याप्त है।

❖ जिस प्रकार की मेहनत कर महिलाएँ माल तैयार करती है, उसके अनुरूप मूल्य उन्हें नहीं मिल पाता है।

❖ ग्रामीण समुदाय स्थानीय वस्तुओं की अपेक्षा बाहरी बस्तुओं को अधिक पसन्द करते हैं। अतः आमदनी के स्त्रोत अत्यधिक सीमित है और अनिश्चितता की स्थिति वाली महिलाएँ हाँ और ना दोनों प्रकार में उत्तर देकर असमन्जस की स्थिति में पायी गयी।

''माइराडा'' ने दक्षिण भारतीय प्रान्तों में अपने अध्ययन में पाया कि 'स्वंय सहायता समूहों' ने स्वरोजगारियों की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने के अलावा परिवार में उनकी भूमिका को मतबूत बनाने का प्रयास किया है [9] और यह बात चयनित उत्तरदाताओं पर भी लागू दिखायी देती है। सम्बन्धित सर्वाधिक महिलाओं ने स्वीकार किया कि 'स्वंय सहायता समूह' से जुड़ने के पश्चात् वे अपनी अधिकांश जरूरतों को पूरा कर पा रही हैं। प्राप्त तथ्य निम्नवत् है। :–

स्वंय की मासिक आय से अपनी जरूरतों को पूरा करने के सन्दर्भ में, उत्तरदाताओं के विचार

सारणी संख्या – 03

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	254	71.55
2.	नहीं	64	18.02
3.	कभी–कभी	37	10.43
4.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 71.55 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी मासिक आय से जरूरतें पूरे होने की बात को स्वीकारा है। 18.02 प्रतिशतने नही ंतो 10.43 प्रतिशत ने कभी कभी जरूरतें पूरी होने की बात को स्वीकार किया है। जो स्वरोजगार अपनाने वाली महिलाओं में आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर सशक्तिकरण को प्रदर्शित करता है।

भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछली कुछ सदियों में बड़े बदलाव का सामना किया है। विद्वानों का मानना है कि इसमें 'स्वंय सहायता समूहों' की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, जिसके माध्यम से महिलाएँ सशक्त होकर पारिवारिक दायित्व निर्वहन के साथ ही व्यक्तिगत रूप से भी सामाजिक श्रेष्ठता के साथ अपनी निर्णय क्षमता को भी विकसित कर रही है। निम्न प्रश्न में घरेलू बजट में उनकी सहभागिता सम्बन्धी विचारों की अभिव्यक्ति तथ्यों के आधार पर निम्नवत् हुई है:—

पारिवारिक तौर पर घरेलू बजट के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर

सारणी संख्या — 04

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्वंय	185	52.11
2.	संयुक्त रूप से	74	20.85
3.	पति	96	27.04
4.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी में बदलाव की स्थिति परिलक्षित होती है। सर्वाधिक 52.04 प्रतिशत उन महिलाओं का है, जो घरेलू बजट स्वंय बनाती हैं। संयुक्त रूप से 20.85 तथा पति द्वारा 27.04 प्रतिशत है।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

अतः घरेलू बजट चाहे महिलाओं द्वारा स्वंय बनाया जाता हो या संरुक्त रूप से उनकी पूर्व परिवारिक व आर्थिक स्थिति में बदलाव का संकेत इंगित करती है।
सशक्तिकरण के प्रमुख उद्देश्यों में महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त बनाना है और 'स्वंय सहायता समूहों' की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह योजना स्थानीय स्तर पर गतिविधियों का सृजन कर महिलाओं के स्वावलम्बन व आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का अधिकार भी देती है। जिसके कारण परिवार व समाज में उनकी निर्णय क्षमता व भागीदारी बढ़ जाती है। चयनित महिलाओं से भी जानने का प्रयास किया गया कि वर्तमान दौर में महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना अनिवार्य है। तथ्य निम्नवत् प्रस्तुत हैः–

आर्थिक रूप से महिलाओं का स्वतंत्र होना अनिवार्य है के सन्दर्भ में,

उत्तरदाताओं का मत

सारणी संख्या – 05

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	355	100.00
2.	नहीं	–	–
3.	कह नहीं सकते	–	–
4.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी के अत्यधिक परिवर्तित व सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं, जिसमें सम्पूर्ण चयनित 100 प्रतिशत महिलाओं ने हाँ में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, 'नहीं व कह नहीं सकते' विकल्प का चयन न करना' स्वंय सहायता समूहों' द्वारा महिला जागरूकता को स्पष्ट करता है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी समूह के सदस्यों में परस्पर अन्तः क्रियात्मक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करती हैं। प्रायः पुरूष महिलाओं व अधिक पढ़े लिखें लोग कम पढ़े लिखें लोगों को कम महत्व देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह बात महिलाओं के सम्बन्ध में स्पष्ट परिलक्षित होती है। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण महिलाओं की स्थिति हमेशा कम रही है। अतः महिलाओं से विभिन्न अवसरों पर आर्थिक क्रियाकलापों सम्बन्धित निर्णय की जानकारी का विवरण निम्नवत् हैः–

परिवारिक स्तर में आर्थिक क्रियाकलापों के निर्णय के सन्दर्भ मे, उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर सारणी संख्या – 06

क्रम सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मुखिया द्वारा	79	22.25
2.	कमाने वाले सदस्यों द्वा	04	1.12
3.	विचार विमर्श से	84	23.67
4.	स्वंय द्वारा	188	52.96
5.	योग	355	100.00

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 22.25 प्रतिशत ने निर्णय मुखिया द्वारा 1.12 प्रतिशत ने कमाने वाले सदस्यों द्वारा (महिला–पुरूष) 23.67 प्रतिशत विचार विमर्श तथा 52.96 प्रतिशत ने स्वंय द्वारा को विकल्प के रूप में चुना है। स्पष्ट है कि स्वरोजगार अपनाने के पश्चात् महिलाओं में आर्थिक निर्णय की क्षमता का विकास होना सशक्तिकरण की प्रक्रिया का एक सार्थक कदम है।

'स्वंय सहायता समूहों' की महत्वपूर्ण भूमिका में बचत की प्रक्रिया से महिलाओं को अवगत कराना एक उपयोगी पहलू है। जैसा कि यूनिसेफ द्वारा स्पष्ट भी किया गया है कि ''स्वंय सहायता समूह अपनी आवश्यकता पूर्ति तथा समस्या समाधान के लिए एक सामूहिक प्रयास करने का साधन है।[10] अर्थात यूँ तो महिलाएँ बचत करने की आदी होती है, लेकिन बचत करने का यह क्षेत्र केवल घर तक ही सीमित होता था। समूहों से जुड़ने के पश्चात् अक्सर देखा गया है कि महिलाएँ बैंक सम्बन्धी जानकारियों द्वारा बचत के अन्य माध्यमों का प्रयोग भी कर रही है। अतः निम्न प्रश्नों के आधार पर उनसे जानने का प्रयास किया कि समूह से जुड़ने के पूर्व व वर्तमान में उनके बैंक में खाते की स्थिति क्या थी, प्राप्त प्रत्युत्तर निम्नवत् है। :–

समूह में शामिल होने से पूर्व उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर
सारणी संख्या–07

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	89	25.07
2.	नहीं	266	74.93
3.	योग	355	100.00

समूह में शामिल होने से पश्चात् उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर
सारणी संख्या – 08

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	355	100.00
2.	नहीं	–	–
3.	योग	355	100.00

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

सारणी संख्या 5.7 में समूह में शामिल होने से पूर्व जिन महिलाओं का बैंक खाते को दर्शाया गया है उनका प्रतिशत 25.07 है, जबकि बैंक खाता न होने का सर्वाधिक प्रतिशत 74.93 रहा है। जबकि स्वंय सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् आज चयनित सम्पूर्ण 100 प्रतिशत महिलाओं ने बैंकों में स्वंय का खाता होने की बात को स्वीकार किया है। अतः आज बैंकों में जमा करने की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी हुई जो महिला सशक्तिकरण हेतु 'स्वंय सहायता समूहों' का सार्थक प्रयास माना जा सकता है।

उपरोक्त तथ्यों के सर्न्दभ में महिलाओं से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि बैंक सम्बन्धी कार्यों का संचालन उनके स्वयं के द्वारा किया जाता है, प्राप्त उत्तर निम्नवत् हैः–

बैंक सम्बन्धी कार्यों का संचालन उनके स्वयं के द्वारा किया जाता है,
के सन्दर्भ में प्रत्युत्तर सारणी संख्या – 09

क्रम0 सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रति□ात
1.	हाँ	341	96.06
2.	नहीं	14	3.94
3.	योग	355	100.00

उपरोक्त तालिका में सर्वाधिक 96..06 प्रतिशत महिलाओं ने बैंक का लेन देन सम्बन्धी कार्य स्वंय द्वारा किया जाना स्वीकार किया, जबकि 3.94 प्रतिशत ने लेन देन में किसी का सहयोग लेकर कार्य करने की बात को स्वीकार किया। शोधार्थिनी द्वारा कारणों के पता लगाने के प्रयास से कुछ ने अस्वस्थता व कुछ ने अपनी व्यक्तिगत परेशानियों से अवगत कराया। लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि जिनकी सहायता से वे इस कार्य को सम्पन्न करवाती हैं, वे महिलाएँही होती हैं।

स्वंय सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक सभी पक्षो पर दृढ़ता से अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। सामाजिक स्थिति से आर्थिक स्थिति का गहरा सम्बन्ध है। आर्थिक मजबूती समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा व

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

उपरोक्त तथ्यों के सन्दर्भ में महिलाओं से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि बैंक सम्बन्धी कार्यों का संचालन उनके स्वयं के द्वारा किया जाता है, प्राप्त उत्तर निम्नवत् हैः–

निश्कर्श–

स्पष्ट है कि 21वीं शताब्दी के आधुनिक विश्व ग्राम ने अपने अधिकारों के प्रति अलख जगा दी है। ''आर्थिक सशक्तिकरण वर्तमान समाज'' की विश्वव्यापी मांग है। आज महिला शक्ति को सावधानी के साथ समुचित उपयोग करने की वैश्विक आवश्यकता है। भारत में महिलाओं की समुचित भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए उनका आर्थिक सशक्तिकरण आवश्यक है।[11] यह कार्य स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से बखूबी किया जा रहा है एंव परिणाम सकारात्मक व संतोषजनक आ रहे हैं। जैसा कि उक्त निष्कर्षो से स्पष्ट होता है कि चयनित उत्तरदाताओं ने स्वंय सहायता समूहों से जुड़कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के साथ ही सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन होते पाया है। घर की चाहरदीवारी में रहने वाली महिलाए स्वंय बैंकों का कार्य संभाले हुए हैं। अपनी आवश्कताओं की पूर्ति, घर परिवार की आर्थिक मजबूती, निर्णय की भागीदारी, आर्थिक स्थिति से स्वंय की संतुष्टि आदि के तथ्य प्रस्तुत कर उन्होंने स्वंय के सशक्त होने के परिणामों को स्वीकार किया है।

सुझाव–

➢ इन संस्थाओं से जुड़ी महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यो की निरन्तरता को बनाये रखना आवश्यक हैं ताकि उन्हें बैंक, बाजार या अन्य संबंधित कार्यो की उपलब्धता प्राप्त हो सके इसके लिए जागरूक अभियान के साथ–साथ रोजगार के अनुरूप ऋण उपलब्ध कराना चाहिए तथा उनके द्वारा निर्मित सामाग्री को बाजार तक पहुँचाना और सही मूल्य दिलवाना आवश्यक हैं।

➢ परम्परागत सोच को परिवर्तित करने के लिए समय–समय पर पारिवार के अन्य सदस्यों को भी इसकी महत्ता को समझना आवश्यक हैं ताकि उनका सहयोग स्वरोजगार अपनाने वाली महिलाओं को मिल पायें।

➢ बिना पारिवारिक सहयोग के महिलाओं के लिए यह कार्य संभव नहीं है। अतः महिलाओं के घरेलू कार्य बोझ को कम करना, उनको सम्मान देना, उनके स्वास्थ का ध्याय रखना और उन पर विश्वास करना नितान्त आवश्यक हैं।

ऐसा करने पर महिलाएँस्वयं को सम्मानित समझेगीं अपने व्यवसाय पर ध्यान देगीं, पारिवारिक आर्थिक संरचना को दृढ़ कर पायेगीं और स्वयं के महत्व को समझ पायेगी।

सन्दर्भ सूची

1 Das, sanjit kumar, “Expansion of micro financing Trough swaran jwayanti gram swarojgar yojana: experience in wast Bengal . economic affairs, vol. 55 No-2. Jine-2010 pp – 180-186

2 भाह रावल गीता एवं भाह गीता एवं भाह बी.सी महिलाओं का आर्थिक स□ाक्तिकरणः □िमला भाहर की □िक्षित महिलाओं के सन्दर्भ में राधा कमल मुखर्जी वर्श 16 अंक 2 जुलाई – दिसम्बर 2014 पृ. 28

3 Srivatava, alka, “women’s self- help group: finding from a study is four indian, “social change” june 2005, vol. 35, no-2, pp. 156-16

4 एम. कार. एम. चेन और आर. झाबवाल, ‘स्पिकिंग आपट : बोमेन्स इकोनमी इम्पावरमेंट इन साउथ ए□ियाः इण्टरमिडिएट टेक्नोलॉजी पाब्लिके□ान, लंदन 1996 पृ.सं–08

5 मायराडा, ”द मायराडा इक्सपिरियंस ए मैनुअल फार कैपेसिटी बिल्डिंग आफॅ सेल्फ हेल्प एफिनिटी ग्रुप” बैगलोर भारत – 2001 पृ.134

6 उद्धत, मल्होत्रा राके□ा, विभिन्न योजनाओं में स्वयं सहायता समूह एटलांटिक पब्लि□ार्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स नई दिल्ली–2007 पृ.–4

7 Goode, willian J. The family, “Prentic Hall, New Delhi, (1995) p.no. 76

8 मायराडा, ”द मायराडा इक्सपिरिंयस ए मैनुअर फार कैपेसिटी बिल्डिंग आफॅ सेल्फ हेल्प एफिनिटी ग्रुप” बैगलोर भारत – 2001 पृ.सं. 135

9 उद्धत, मल्होत्रा राकेष, विभिन्न योजनाओं में स्वयं सहायता समूह, एटलांटिक पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स नई दिल्ली – 2007 पृ.–4

10 षाह रावल गीता एवं षाह गीता एवं षाह बी.सी महिलाओं का आर्थिक सषक्तिकरणः षिमला षहर की षिक्षित महिलाओं के सन्दर्भ में राधा कमल मुखर्जी वर्श 16 अंक 2 जुलाई–दिसम्बर 2014 पृ.28

11 नेमीसराय मोहन दास, राजनीतिक तथा महिलाएँ, दैनिक जागणन, 4नवम्बर 1991 पृ.सं.–04

IJNRD
Research Through Innovation